# भारतीय इतिहास के स्रोत

①

* 'इण्डस' - लैटिन शब्द
* "इण्डिया" → भारत देश को इण्डिया सर्वप्रथम हखामनी ईरानियों द्वारा दिया गया
* "सप्तसैन्धव" - नाम पारसियों के पवित्र ग्रन्थ "जिन्द अवेस्ता" में दिया गया।
  ↳ सरस्वती की सात नदियों का स्रोत
* "इन्डोस" (यूनानी भाषा का शब्द) - यूनानियों द्वारा नाम दिया गया।
* "हप्त हिन्दु" - ईरानियों/पारसियनों की पुस्तक "मेह्रेयास्त" और "यास्ना" में "सप्त सिन्धु" के स्थान पर "हप्त हिन्दु" शब्द का प्रयोग किया गया है।
* 'तिएन-चू', 'चुआंतू', "यिन-तू" ⇒ चीन वासियों द्वारा भारत के लिए प्रयुक्त शब्द है।

diwakar@specialclasses

* 'आर्य देश', 'ब्रह्मराष्ट्र' - इत्सिंग द्वारा प्रयुक्त शब्द।
* 'आर्यावर्त' - पतंजलि के समय में प्रयुक्त हुआ (150 BC)
* प्राचीन भारत का इतिहास लिखने का प्रथम प्रयास यूनानी लेखकों द्वारा किया गया। (हेरोडोटस, नियार्कस, मेगस्थनीज, प्लूटार्क, एरियन, स्ट्रैबो, प्लिनी, टालमी)
* अलबरूनी (यूनानी लेखक) द्वारा "तहकीक-ए-हिन्द" एवं "किताब-उल-हिन्द" में भारत का वस्तुपरक इतिहास लिखा गया है।
* ब्रिटिश इतिहासकार - विलियम जोन्स, मैक्समूलर, मोनियर विलियम्स, जे.एस. मिल, एफ.डब्लू हीगल, विन्सेंट आर्थर स्मिथ,
* मैक्समूलर द्वारा "सेक्रेड बुक्स आफ द ईस्ट" में वेदों का अनुवाद किया गया है।
* जेम्स मिल ने बिना भारत आये ही, 6 खण्डों में भारत का इतिहास लिखा उसने भारतीय इतिहास को 3 भागों/कालों में विभक्त किया।

* (B. A. Smith) ⇒ 1904 में "Early History of India" लिखी

* ("हिन्दू पालिटी") – के. पी. जायसवाल द्वारा 1924 में लिखी गयी।

* "Political History of Ancient India" – एच. सी. रायचौधरी

* "History and Culture of the Indian people" – आर. सी. मजूमदार

* A History of Ancient India
  A History of South India
  } नीलकण्ठ शास्त्री

diwakar@specialclasses

* "Hindu Civilization"
  "चन्द्रगुप्त मौर्य"
  "अशोक"
  "Fundamental unity of India"
  } (आर. के. मुकर्जी)

* "हिस्ट्री आफ धर्म शास्त्र" – (पी. वी. काणे)

* भारत के मार्क्सवादी इतिहासकार ⇒ डी. डी. कौशाम्बी, डी. आर. चानना, आर. एस. शर्मा, रोमिला थापर, इरफान हबीब, विपिन चन्द्र, शतीसचन्द्र

* "Historica" ⇒ (हैरोडोटस)

* Periplus of the erinthrian Sea ⇒ अज्ञात यूनानी लेखक

* "भारत का भूगोल" ⇒ "टालमी"

* Natural Historica – (प्लिनी)

* "सी-यू-की" – ह्वेनसांग द्वारा लिखित भारत का यात्रा वृत्तांत

* Epigraphy (अभिलेखशास्त्र) – उत्कीर्ण लेखों का अध्ययन

* ("पुरालिपि विद्या") – लिपियों के विकास का अध्ययन

* (अग्रहार) – ब्राह्मणों को दान की जाने वाली करमुक्त भूमि

* (न्यूमिसमेटिक्स) (मुद्राशास्त्र) – सिक्कों का अध्ययन

* ('पंचमार्क' या 'आहत') – भारत के प्राचीनतम सिक्के (5वीं, 6वीं BC)
  चांदी एवं तांबे के सिक्के
  ठप्पा मारकर प्रतीक चिन्ह अंकित किये गये है।

* भारत में पहली बार लिखित स्वर्ण सिक्के – हिन्द-यवन (Indo-greeks) शासकों द्वारा चलाये गये

* कुषाणों ने 124 ग्रेन के शुद्ध स्वर्ण सिक्के चलवाये थे।

* कुषाणों ने ही सर्वाधिक तांबे के सिक्के भी चलवाये।

* समुद्रगुप्त तथा कुमारगुप्त की मुद्राओं से "अश्वमेघ यज्ञ" की सूचना मिलती है।

diwakar@specialclasses

* सातवाहन राजा (यज्ञश्री सातकर्णी) के सिक्कों पर जलयान का चित्र मिलता है।

1500 BC से 600 BC का काल भारतीय इतिहास का अन्धकार युग कहा जाता है।

नवीन उत्खननों के आधार पर पता चलता है कि काशी में 1500 BC से ही 'लोहे' का प्रयोग होने लगा था।

भारत में शैल चित्रकला की परम्परा 12 हजार वर्ष पुरानी है।

✓ "इतिहास विज्ञान है, न कम न ज्यादा" – 'ब्यूरी'

# प्रागैतिहासिक काल

⇒ भारतीय प्रागैतिहासिक को उद्घाटित करने का श्रेय डा० प्राइमरोज (अंग्रेज)
- 1842 में कर्नाटक के रायचूर जिले के लिंगसुगुर स्थान से प्रागैतिहासिक औजारों की खोज

⇒ पाषाण कालीन बस्तियों के अन्वेषण की शुरुआत Geological Survey के अधिकारी (ब्रूस फूट) ने की। (1863)

⇒ 1935 में डी०टेरा तथा पीटरसन द्वारा शिवालिक पहाड़ियों की तलहटी में पोतवार के पठारी भागों का व्यापक सर्वेक्षण किया।

⇒ सर मार्टीमर व्हीलर के प्रयासों से भारत के समग्र प्रागैतिहासिक सांस्कृतिक अनुक्रम का ज्ञान हुआ।

⇒ "Pre Historic India" (Book) — स्टुअर्ट पिग्गट (1950)

⇒ पुरापाषाण काल के किसी मानव का अस्थिपंजर (जीवाश्म) अभी तक भारत में प्राप्त नहीं हुआ है।

⇒ सबसे प्राचीन जीवाश्म (वानरों के) शिवालिक की पहाड़ियों से मिले हैं।
- "रामापिथिकस" (Pliocene युग)

⇒ सीधा चलने वाला सबसे पहला वानर अफ्रीका (मध्य) में पाया गया।
- "आस्ट्रेलियोपिथिकस"
  - उपजाति
    - "आरम्भिक पुरापाषाणकालीन संस्कृति का नेता"
    - जिन्जैनथ्रोपस (5 लाख वर्ष पूर्व) → औजार बनाती थी

⇒ एशिया से प्राप्त आदिमानव (जीवाश्म) → पिथिकैन्थ्रोपस इरेक्टस
- जावा से प्राप्त
- or होमो इरेक्टस
- or जावा मानव

⇒ चीन के पीकिंग गुफाओं से प्राप्त जीवाश्म → पीकिंग मानव या सिनेन्थ्रोपस

diwakar@specialclasses

⑤

⇒ जर्मनी में नियन्डर घाटी से प्राप्त आदिमानव का जीवाश्म
↓
नियन्डरथल मानव (मध्यपुरापाषाणकालीन)

⇒ चालीस हजार वर्ष पूर्व आधुनिक मानव → होमोसेपियन्स, सेपियन्स का प्रादुर्भाव हुआ।
↓
उपजातियाँ
↓
क्रोमैगनन, ग्रिमाल्डी, चान्सलेड

⇒ हरबर्ट रिजले द्वारा 7 श्रेणियों में भारत के नृतत्वीय विभाजन किया गया।
↓
मंगोल, भारतीय आर्य, द्रविण, मंगोल-द्रविण, शक-द्रविड़, तुर्की-ईरानी

⇒ वी. एस. गुहा के नवीनतम मतानुसार भारत में 6 प्रमुख प्रजातियां तथा उनके 9 प्रकार है।
↓
1 - नीग्रिटो → अब भारत में लुप्त → (कुछ अंश अण्डमान, ट्रावनकोर, असम, राजमहल पर्वत श्रृंखला में विद्यमान जनजाति में है)
2 - प्रोटो आस्ट्रेलायड - मिश्रित रूप में
3 - मंगोल
- a - पेलियो मंगोलाइड
- b - तिब्बती मंगोल → सिक्किम व भूटान में

मंगोल → दीर्घशिरस्क असम-म्यांमार सीमा पर
मंगोल → गोल सिर वाले म्यांमार या चटगांव में

4 - मेडीटरेनियन
- a - पेलियो मेडीटरनीयन → कन्नड़, तमिल, मलयालम
- b - मेडीटेरेनियन
- c - पूर्वी प्रकार → पंजाब, सिन्ध, प०उ०प्र०

5 - पाश्चात लघुशिरस्क
- a - एल्पिनाइड - कठियावाड़ क्षेत्र
- b - डाइनेरिक - बंगाल
- c - आर्मिनाइड - पारसी

यूरोपीय → पंजाब व ऊपरी गंगा घाटी

6 - नार्डिक — पश्चिमी भारत में।

⇒ पूर्व पुरापाषाण काल में मानव क्वार्ट्ज़ाइट पत्थरों का प्रयोग करता था।

diwakar@specialclasses

# पुरापाषाणयुग की अवस्थायें



प्रागैतिहासिक (Prehistoric)

- पुरापाषाणकाल (Palaeolithic age) (25 लाख BC से 10 हजार BC)
  - पूर्व पुरा पाषाण काल (Lower Palaeolithic age) (25 Lac BC — 9 Lac BC)
  - मध्य पुरापाषाण काल (Middle Palaeolithic age) (9 Lack BC — 40 हजार BC)
  - उच्च पुरापाषाणकाल (Upper Palaeolithic) (40,000 BC–10000 BC)
- मध्यपाषाण काल (Mesolithic age) (8000 BC — 4000 BC)
- नव पाषाण काल (Neolithic age) (9000 BC — 1000 BC)

diwakar@specialclasses

1(i) पूर्व पुरापाषाण काल: * कृषि का ज्ञान नहीं था।
* इस काल का मानव आखेटक और खाद्यसंग्राहक था।
* पशुपालन का प्रारंभ नहीं हुआ था।
* अग्नि का ज्ञान तो था परन्तु इसके उपयोग से मानव परिचित नहीं था।
* पाषाण निर्मित औजार बनाना इस काल की प्रमुख विशेषता थी।
* औजार मुख्यतः क्वार्टजाइट, बलुआ पत्थर, लैटेराइट एवं चेलसीडनी से बने होते थे।

भीमबेटका की चित्रकारी: सर्वाधिक प्राचीन चित्रकारी
* 243 प्रागैतिहासिक शिलाश्रय
* प्रारम्भिक चित्रों में हरे एवं गहरे लाल रंगों का उपयोग

1(ii) मध्य पुरापाषाण काल: * इस काल में तापमान में भारी गिरावट आयी थी।
* इसकाल की विशिष्ट पहचान देने वाले उच्च कोटि के औजार महाराष्ट्र के नेवासा के निकट चिरकी से प्राप्त हुए, अतः इस काल को नेवासाई चरण की संज्ञा भी दी जाती है।

* मध्य पुरापाषाण काल में जैस्पर, चर्ट, फ्लिंट आदि के पत्थर प्रयुक्त होने लगे।
* प्रमुख औजार फलक, बेधनी, देदनी और खुरचनी थे। फलकों की अधिकता के कारण इस काल को फलक संस्कृति की संज्ञा दी जाती है।

1(iii) उच्च पुरापाषाण काल: * इस काल में आर्द्रता कम थी, तथा इस काल के अन्त में हिमयुग की समाप्ति के कारण तापमान अपेक्षाकृत गर्म हो गया था।
* इस काल में विश्वव्यापी संदर्भ में दो विलक्षणताएँ थी :-
(1) नये चकमक उद्योग की स्थापना।
(2) आधुनिक मानव - होमो सैपिन्स का उदय।
* इसकाल का प्रधान उपकरण ब्लेड था।
* अस्थि उपकरणों का भी बहुतायत में प्रयोग होने लगा।
* इस काल की भारत में उल्लेखनीय खोज - रोड़ी मलबे (टोका चिनाई) से बना 85 cm व्यास वाला स्थूल आकार का गोलाकार चबूतरा जिसकी खोज इलाहाबाद और बर्कले विश्वविद्यालय के उत्खननकर्ताओं ने की।

diwakar@specialclasses

(2) मध्य पाषाण काल: (8000 BC – 4000 BC)

* तापमान बढ़ने के साथ मौसम शुष्क और गर्म होने लगा।
* भारत में इस काल के विषय में जानकारी 1867 ई० में हुयी जब सी. एल. कर्लाइल ने विन्ध्य क्षेत्र से लघु पाषाण उपकरण खोज निकाले।
* इस काल के औजार छोटे पत्थरों से बने हुए थे।
* ज्यामितीय औजार – ब्लेड, क्रोड, नुकीले त्रिकोण, एवं नवचन्द्रकार प्रमुख ज्यामितीय औजार थे।
* भारत में मानव अस्थि पँजर मध्य पाषाण काल से ही सर्वप्रथम प्राप्त होने लगते हैं।

## प्रमुख स्थल: (पुरापाषाण कालीन)



**राजस्थान:** * पचपद्र नदी घाटी और सोजत इलाके से सूक्ष्म औजार
* यहां महत्वपूर्ण बस्ती तिलवारा पायी गयी।
* भीलवाड़ा जिले में कोठारी नदी के तट पर स्थित "बागौर" भारत का सबसे बड़ा मध्यपाषाणकालिक स्थल है। इसका उत्खनन 1968-70 तक वी.एन. मिश्र ने करवाया। पूरे स्थल से पशुओं की जली अस्थियाँ, कब्रे, मानव कंकाल, झोपड़ी, फर्शों के साक्ष्य आदि प्राप्त हुए है।

**गुजरात:** * यहां ताप्ती, नर्मदा, माही, साबरमती नदियों के आस-पास कई स्थल प्राप्त हुए है।
* जिनमें अक्खज, बलसाना, हीरपुर, लंघनाज प्रमुख है।
* लंघनाज से 100 से अधिक ठोस रेत के टीले, सूक्ष्म पाषाण उपकरण, कब्रे और पशुओं की हड्डियां प्राप्त हुयी है। तथा 14 मानव कंकाल प्राप्त हुए है।

diwakar@specialclasses

**उत्तर प्रदेश:** * प्रतापगढ़ स्थित सराय नहर राय का उत्खनन कार्य जी.आर. शर्मा ने कराया। छोटी बस्ती के साक्ष्य, अनेक छोटी भट्ठियाँ, झोपड़ी का फर्श और कब्रे, नर कंकाल, सींग निर्मित उपकरण, प्राप्त हुए है।
* समाधि स्थल में शवों का सिर पश्चिम तथा पैर पूर्व की ओर है।
* प्रतापगढ़ के महदहा से स्तम्भगर्त, हड्डियों की कलात्मक वस्तुएं। बारहसिंगा, भैंस, हाथी, गैंडा, सुअर, कछुए और पक्षियों के अवशेष प्राप्त हुए है। यहां ऐसे शवाधान प्राप्त हुए है, जिसमें दो व्यक्तियों को एक साथ दफनाया गया है।

**मध्य प्रदेश:** * होशंगाबाद जिले में आदमगढ़ शैलाश्रय समूह में 25000 सूक्ष्म पाषाण औजार प्राप्त हुए।
* पंचमढ़ी के निकट दो शैलाश्रय मिले है जिनका नाम जम्बूद्वीप और डोरोथीद्वीप है।

जीवन शैली : * शिकार पर निर्भर। ✓अन्तिम चरण में मृद्भाण्डों का निर्माण करना सीख गये। * अन्त्येष्टि संस्कार विधी के विषय में भी जानकारी मिलती है।

* मृतकों को समाधियों में गाड़ते थे, और साथ में खाद्य सामग्री और औजार रखते थे, जो कि लोकोत्तर जीवन में विश्वास का सूचक है।

* पत्थर की गुफाओं की दीवारों पर चित्रों और नक्काशियों से इस काल की सामाजिक जीवन और क्रियाकलापों की जानकारी प्राप्त होती है।

शैलचित्रों के प्रमुख स्थल :

* उ० प्र० के मुरहना पहाड़
* म० प्र० में भीम बेटका, आदमगढ़, लाखा जुआर
* कर्नाटक में कुपागल्लु

diwakar@specialclasses

(3) नवपाषाण काल :

⇒ नवपाषाण काल या Neolithilic शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 'सर जान लुबाक' ने 1865 में प्रकाशित पुस्तक "प्रीहिस्टरिक टाइम्स" में किया।

⇒ नवपाषाण काल की चार प्रमुख विशेषताएँ

①- कृषि कार्य , ②- पशुपालन

③- पत्थर के औजारों का घर्षण और उन पर पालिश करना

④- मृद्भाण्ड बनाना

(अन्य विशेषताएँ) ⇒ स्थाई निवास, वस्त्र निर्माण, अग्नि का उपयोग,

* इस काल के अन्त में धातुयों (सर्वप्रथम - तांबा) का प्रयोग प्रारम्भ, नृत्य गान एवं आखेट से मनोरंजन।

* सर्वप्रथम नील नदी घाटी में मिश्र में असवान डैम के उत्तर में स्थित बाडीकुब्बानियां से गेहू और जौ के साक्ष्य मिले है।

प्रागैतिहासिक का अर्थ ⇒ वह इतिहास जिसको पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर लिखा गया हो।

⇒ मानव को आग की जानकारी – निम्न पुरापाषाण काल में हुयी।

⇒ मानव ने आग का उपयोग सर्वप्रथम सीखा – नव पाषाण काल में।

⇒ 'पेबुल उपकरण' सम्बन्धित है :- निम्न पुरापाषाण काल से।

⇒ सोहन घाटी का सम्बन्ध है :- निम्न पुरापाषाण काल से।

⇒ बेलन घाटी से प्राप्त झोंजार – निम्न पुरा पाषाणकाल से सम्बन्धित है।

⇒ मानव की आखेटक और खाद्य-संग्राहक की अवस्था :- पुरापाषाण काल से जुड़ी है।

⇒ शल्कों से बने झोंजार सम्बन्धित है :- मध्य पुरापाषाण काल से।

⇒ भीमबेटका एक प्रागैतिहासिक स्थल है, जहां से चित्रकला के साक्ष्य प्राप्त हुए है।

diwakar@specialclasses

⇒ पशुपालन का प्रारम्भ मध्य पाषाण काल से माना जाता है।

⇒ भारत के दो सबसे पुराने मध्यपाषाणकालीन स्थल – सरायनाहर राय, महदहा

⇒ प्रारम्भिक स्तम्भ गर्त पाए गये है! सरायनाहर राय एवं महदहा से

⇒ मानव द्वारा पाला गया प्रथम पशु – (कुत्ता)

⇒ मानव द्वारा प्रयोग में लायी गयी पहली धातु – (ताँबा)

⇒ मानव द्वारा उपयोग में लायी गयी पहली फसल – (गेहूँ)

⇒ कृषि का प्रथम उदाहरण प्राप्त हुआ – (मेहरगढ़ (नवपाषाणकालीन)) से

⇒ कोलिडहवा का सम्बन्ध है: चावल के प्राचीनतम साक्ष्य से

⇒ बुर्जाहोम सम्बन्धित है :- (नवपाषाणकालीन) स्थल से

⇒ पूर्वी भारत का प्रमुख नवपाषाणकालीन स्थल है :- (चिरांद)

⇒ कुम्भकारी प्रारम्भ हुयी - (नव पाषाण) काल से।

⇒ ताम्बवती के नाम से प्रसिद्ध है :- (अहार संस्कृति)

⇒ हड़प्पा की कनिष्ठ कालीन संस्कृति है :- (कयथा संस्कृति)

⇒ इनामगांव (ताम्रपाषाणयुगीन बस्ती) सम्बन्धित है :- (जोर्वे संस्कृति से)

⇒ ताम्रपाषाण संस्कृतियों में किस संस्कृति में पत्थर के औजार प्राप्त नही हुए ⇒ (अहार संस्कृति से)

⇒ दैमाबाद का सम्बन्ध है :- (ताम्र पाषाणकालीन) से

⇒ बड़ी संख्या में दफनाए गये बच्चों के शवाधान प्राप्त हुए :- (जोर्वे संस्कृति से।

⇒ गिलुन्द स्थल का सम्बन्ध है :- (अहार संस्कृति) से।

⇒ ताम्रपाषाण मृदभांडों में उत्कृष्टतम मृदभांड है :- (मालवा मृदभांड)

⇒ आंध्र प्रदेश का उतनूर सम्बन्धित है :- नव पाषाण कालीन संस्कृति से।

diwakar@specialclasses

⇒ हल्लूर, पिकलीहल, संगनकल्लू, टी. नरसीपुर, तथा पैयम पल्ली ⇒ (नव पाषाण कालीन) स्थल है।

⇒ माइक्रोलिथिक औजार → (मध्य पाषाण काल) से सम्बन्धित है।

⇒ राजस्थान का बागौर और मध्य प्रदेश का आदमगढ़ सम्बन्धित है :- (मध्य पाषाण काल) से

⇒ सबसे कम अवस्था थी :- (मध्य पाषाणकाल) की।

⇒ आधुनिक मानव होमोसेपियन्स का प्रादुर्भाव हुआ : (उच्च पुरा पाषाण काल) में।

⇒ क्वार्टजाइट पत्थरों के स्थान पर जैस्पर, चर्ट आदि के पत्थर सर्वप्रथम प्रयुक्त हुए :- (मध्य पुरा पाषाण) काल में।

⇒ हस्त कुठार, विदारणी और खण्डक (गड़ासा) उपकरण प्रयुक्त होते थे :- (निम्न पुरा पाषाण काल) में।

⇒ आहार संस्कृति का प्रमुख क्षेत्र है ⇒ दक्षिण पूर्वी राजस्थान की (बनास घाटी) (12)

⇒ नर्मदा घाटी में विकसित हुयी संस्कृति थी ⇒ (मालवा संस्कृति)

⇒ एरण, नगदा और नवदाटोली का सम्बन्ध है ⇒ (मालवा संस्कृति) से

⇒ भारत में दो संस्कृतियां एक साथ पायी गयी है :- (मध्य पाषाण काल) एवं (नव पाषाण काल)

⇒ भारत में जो (एकमात्र मानवाश्म कपि) पाया जाता है, वह है :- असम का श्वेतभुज गिब्बन

diwakar@specialclasses

⇒ प्राचीन भारतीय भौगोलिक मान्यता के अनुसार भारतवर्ष किस द्वीप खण्ड का भाग था :- (जम्बुद्वीप)

⇒ प्रागैतिहासिक कुल्हाड़ियां मिली है :- (अतिरंपक्कम) से।

⇒ पुरातात्विक स्थानों के पुरावशेष कालानुक्रम है :- कुरनूल गुफाएं < दमदमा < टेक्कलकोट < नैकुंडा

⇒ भारत के पूर्व प्रस्तर युग के अधिकांश औजार बने थे - (स्फटिक) के।

⇒ सुमेलित युग : बस्ती स्थल - (चिरांद)
समाधि स्थल - (पोरकालम)
बस्ती एवं समाधि स्थल - (पिक्लीहल)

⇒ सुमेलन : चोपानी माण्डो ⇒ (मध्य पाषाण काल)
कुल्ली ⇒ (ताम्र पाषाण काल)
अतिरंपक्कम ⇒ (पुरा पाषाण काल)
इनामगांव ⇒ (पूर्व हड़प्पा कालीन)

⇒ दक्कन के "अश्म टीले" :- नवपाषाण युग के मवेशी रखने वालों की बस्ती के अवशेष।

⇒ केस स्थल की खुदाई प्रस्तर युग से हड़प्पा संस्कृति तक निरन्तर क्रम और सांस्कृतिक विकास का प्रमाण देते है :- (मेहरगढ़ (बलूचिस्तान, पाकिस्तान))

⇒ सबसे पहले "मानव सदृश प्राणी" जो प्राज्ञ मानव (होमोसेपियन्स) से प्रजातीय रूप से भिन्न था, उसे सामान्यतया जाना जाता है :-
→ (पिथेकेन्थ्रोपस) के रूप में।

⇒ (ताम्र संचय) का सम्बन्ध है :- (गेरूवर्णी) मृद्भाण्ड से।

⇒ भारत में एक मात्र मानवकपि (रामापिथिकस) के जीवाश्म का प्रमाण मिला है :- "(शिवालिक पहाड़ी से)।

⇒ ब्लेड से बने औजार प्रमुख विशेषता थे :- (उच्च पुरापाषाण) काल में।

⇒ पूर्व पुरापाषाणकाल के कुछ औजार, (16 आर और सिंगी तालाब मे) पाये गये हैं जो स्थित थे :- (राजस्थान) में।

⇒ शल्क निर्मित औजार प्रमुख रूप से पाये गये हैं :- (मध्य पुरा पाषाण काल

सुमेलित : (स्थल) ⟺ (शैलचित्र)

- उत्तर प्रदेश ⟶ मुरहाना पहाड़
- मध्यप्रदेश ⟶ लाखा जुआर
- मध्य प्रदेश ⟶ भीमबेटका
- कर्नाटक ⟶ कुपागल्लु

diwakar@specialclasses

⇒ भेड़, बकरियां आदि को रखे जाने का साक्ष्य प्राप्त हुआ :- (बागौर) से

⇒ गंगाघाटी में चावल के प्राचीनतम प्रमाण है :- चौथी सहस्राब्दी ई०पू०

⇒ कपास का प्राचीन साक्ष्य प्राप्त हुआ है :- (मेहरगढ़)

⇒ गणेश पूजा का साक्ष्य प्राप्त हुआ है :- (दैमाबाद) (महाराष्ट्र) से

# हड़प्पा सभ्यता



⇒ 1921 में दयाराम साहनी द्वारा खोज की गयी।

⇒ वर्तमान शोधो के आधार पर इसे 3500 ई०पू० की सभ्यता माना गया है।

⇒ भारतीय पुरातत्व एवं सर्वेक्षण विभाग का जन्मदाता - अलेक्जेन्डर कनिंघम

⇒ भारतीय पुरातत्व विभाग की नींव वायसराय लार्ड कर्जन के काल में पड़ी।

⇒ राखलदास बर्नजी ने 1922 में मोहनजोदड़ो की खोज की।

हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न नाम
- हड़प्पा सभ्यता
- सिन्धु घाटी सभ्यता
- सिन्धु सरस्वती सभ्यता
- कांस्य युगीन सभ्यता
- प्रथम नगरीय क्रान्ति

**काल-निर्धारण:** इस सभ्यता की लिपि पढ़ी ना जा सकने के कारण कालक्रम निर्धारण एक जटिल कार्य है।

① रेडियो कार्बन विधि → 3500 BC – 1300 BC
- पूर्व हड़प्पाई काल (3500 – 2600 BC)
- परिपक्व हड़प्पाई काल (2600 – 1900 BC)
- उत्तर हड़प्पाई काल (1900 – 1300 BC)

diwakar@specialclasses

② सर मार्टिमर व्हीलर → 2500 BC — 1500 BC

③ डी०पी० अग्रवाल → 2350 BC – 1750 BC

④ सरजॉन मार्शल → 3250 BC – 2750 BC

⑤ मैक → 2800 BC – 2500 BC

⑥ एम० एस० वत्स → 3500 BC – 2500 BC

⑦ डेल्स → 2900 BC – 1900 BC

## सिन्धु सभ्यता की मानव प्रजातियाँ

(i) **प्रोटोआस्ट्रेलायड:** यह सिन्धु क्षेत्र में आने वाली प्रथम जनजाति थी। अभी भी SC/ST के रूप में भारत में विद्यमान है।

(ii) भूमध्यसागरीय (मेडिटेरियन) : * सिन्धु सभ्यता की निर्माता प्रजाति
* ई० भारत में विद्यमान है।

(iii) मंगोलायड : उप हिमालयी क्षेत्रों - असम, सिक्किम, भारत-म्यांमार सीमा, चटगांव का पहाड़ी क्षेत्र में पाये जाते है।

(iv) अल्पाइन : विशेषकर सिन्धु प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक एवं तमिलनाडु में।

उद्भव
- विदेशी उद्भव का मत : * मेसोपोटामिया की सुमेरियन सभ्यता से हड़प्पा सभ्यता का विकास का मत।
  - समर्थक → क्रेमर, गार्डन चाइल्ड, एच० डी० सांकलिया
- स्वदेशी उद्भव का मत : * सिन्धु सभ्यता का उद्भव ईरानी, बलूच और सिन्धु संस्कृतियों (आमरी, कोटदीजी) तथा भारत की स्थानीय संस्कृतियों से हुआ।
  * समर्थक : फेयर सर्विस, अमलानन्द घोष (सोथी संस्कृति), डी० पी० अग्रवाल और अल्चिन (दोनो ने सोथी संस्कृति को ही उद्भव का स्रोत माना)

diwakar@specialclasses

→ प्राक हड़प्पा स्थल : "स्थल जो हड़प्पा सभ्यता के उद्भव से पूर्व से मौजूद थे।"

दक्षिणी अफगानिस्तान → मुंडीगाक, देह मोरासी घुंडई,

बलूचिस्तान (पाकिस्तान) - नाल, किले गुलमोहम्मद, दम्बसदात, पेरियानो घुंडई, झंजीरा, स्याहदम्ब, नून्दरा, कुल्ली, मेही, पीराक दम्ब, मेहरगढ़।

सिन्धप्रान्त - आमरी, कोटदीजी

पंजाब प्रांत (पाकिस्तान) : हड़प्पा, सरायखोला, जलीलपुर।

राजस्थान - कालीबंगा

हरियाणा - राखीगढ़ी, बनावली

→ हड़प्पन स्थल : अफगानिस्तान - मुण्डीगाक, शुर्तुगुई

पाकिस्तान
- ई० बलूचिस्तान - सुत्कागेण्डोर, सोत्काकोह, डाबरकोट, बालाकोट
- सिन्ध प्रान्त - मोहनजोदड़ो, चन्हूदड़ो, जुडेरजोदड़ो, आमरी, कोटदीजी, अलीमुराद।
- पंजाब प्रान्त - हड़प्पा, डेरा इस्माइलखान, जलीलपुर, रहमान ढेरी, गुमला

**भारत**
- जम्मू-कश्मीर – माण्डा
- पंजाब – रोपण, कोटलानिहंग खान, चक-86 बाड़ा, संघोल, डेरमजरा
- हरियाणा – बनावली, मिताथल, सिसवल, बणावली, राखीगढ़ी, बालू,
- राजस्थान – कालीबंगा
- उत्तर प्रदेश – आलमगीरपुर (मेरठ), बड़ागाव एवं हुलास (सहारनपुर)
- गुजरात
  - कच्छ की खाड़ी → देशलपुर, सुरकोटदा, धौलावीरा।
  - खम्भात की खाड़ी → लोथल, रंगपुर, रोजदी, प्रभास, भगतराव, नागेश्वर, कुन्तासी, मेघम, शिकारपुर।
- महाराष्ट्र – दैमाबाद (अहमदनगर जिला, गोदावरी तट पर स्थित)

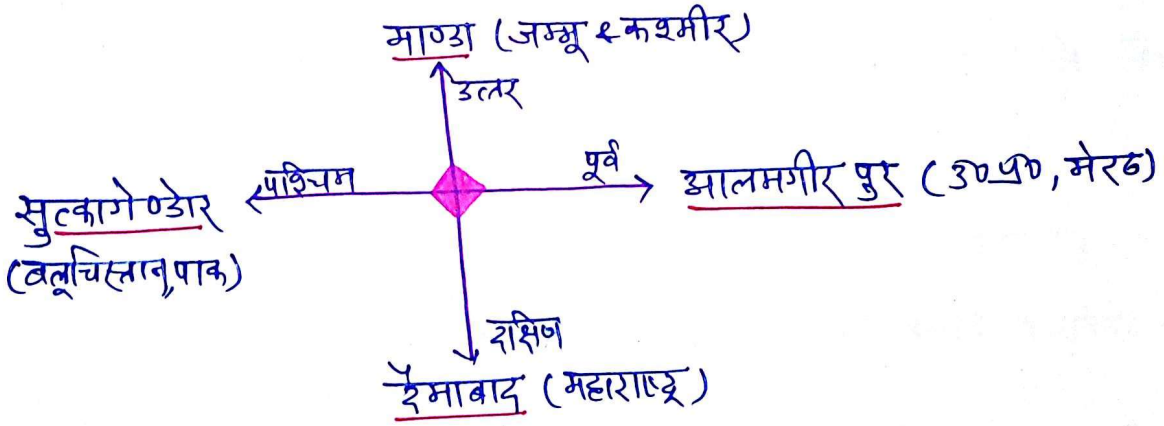




हड़प्पोत्तर स्थल: रोजदी एवं रंगपुर।

तीनों कालो के स्थल: सुरकोटदा, धौलावीरा, राखीगढ़ी, मांडा।

diwakar@specialclasses

**महत्वपूर्ण तथ्य:**

⇒ सिन्धु सभ्यता के अधिकांश निवासी भूमध्य सागरीय प्रजाति के थे।

⇒ सिन्धु सभ्यता के लोग लौह धातु से अपरिचित थे।

⇒ उत्खनन के आधार पर सैन्धव कालीन सभ्यता की तिथि 2500BC निर्धारित की गयी

⇒ सैंधव सभ्यता के लोग पशुपति की पूजा करते थे।

⇒ सिन्धु सभ्यता के पतन का प्रमुख कारण विनाशकारी बाढ़ था।

⇒ सैन्धव सभ्यता एक नगरीय सभ्यता थी।

⇒ मोहनजोदड़ो का प्रमुख सार्वजनिक स्थल "स्नानागार" था। (17)

⇒ सैन्धव सभ्यता "मातृप्रधान" थी।

⇒ सैन्धव स्थल "लोथल" गुजरात में स्थित है।

⇒ मोहनजोदड़ो के उत्खनन से "आर० डी० बर्नजी" सम्बन्धित है।

⇒ सैन्धव सभ्यता के व्यापारिक सम्बन्ध सुमेर, ईरान, बहरीन से थे।

⇒ स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सबसे अधिक सैन्धव सभ्यता के स्थल गुजरात से खोजे गये।

⇒ मिस्र, सुमेर एवं मेसोपोटामिया की सभ्यताएँ सैन्धव सभ्यता की समकालीन थी।

⇒ मार्टिमर व्हीलर ने मत दिया कि सैन्धव सभ्यता का विनाश आक्रमणकारी आर्यों ने किया।

diwakar@specialclasses

⇒ सैन्धव सभ्यता मानव इतिहास के आद्य ऐतिहासिक काल से सम्बन्धित है।

⇒ प्रसिद्ध काँस्य नर्तकी की मूर्ति (मोहनजोदड़ो) से प्राप्त हुयी थी।

⇒ घोड़े के अवशेष सुरकोटदा (कच्छ की खाड़ी) से प्राप्त हुए है।

⇒ सिन्धु सभ्यता के मुहरों पर गाय, ऊँट, घोड़ा आदि पशुओं का अंकन नहीं मिलता है।

⇒ चारागाही अर्थव्यवस्था सिन्धु सभ्यता की विशेषता नहीं थी।

⇒ मोहनजोदड़ो में आवास ईंटो से बने हुए थे।

⇒ सिन्धु घाटी की लिपि की सूचना मोहरों से प्राप्त होती है।

⇒ सिन्धु घाटी सभ्यता का सर्वाधिक उपयुक्त नाम हड़प्पा सभ्यता होना चाहिए।

⇒ कालीबंगा से जुते हुए खेत के साक्ष्य प्राप्त हुए है।

⇒ सिन्धु लिपि को बाँए से दाँए पढ़ने और उसे तमिल भाषा में परिवर्तित करने वाले विद्वान रेवरेण्ड हेरस थे।

⇒ सिन्धु व सुमेरियन सभ्यता अन्न भण्डार प्रणाली में समान थी।

⇒ "धर्म" वर्तमान भारतीय जीवन का वह क्षेत्र है जो आज भी सिन्धु सभ्यता से प्रेरणा ले रहा है।

⇒ युगल शवाधान के साक्ष्य लोथल से मिले है।

⇒ सैन्धव सभ्यता से सूती वस्त्र के उल्लेख मिले है।

⇒ लोथल जो सिन्धु सभ्यता का प्रमुख पत्तन नगर था, खम्भात की खाड़ी में स्थित था।

⇒ मोहनजोदड़ो की इमारते नगर के सम्पूर्ण क्षेत्र में नियोजित ढंग से फैली थी।

⇒ प्रसिद्ध पशुपति मुहर मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुयी है।

⇒ हड़प्पा में ईंटों के नाप का अनुपात (1:2:4) था।

⇒ सिन्धु सभ्यता से प्राप्त मुहरें स्टेटाइट की बनी थी।

⇒ कालीबंगा से अग्नि वेदिकाओं के प्रमाण मिले है।

⇒ माण्डा (जम्मू-कश्मीर) चिनाव नदी पर स्थित है।

⇒ मोहनजोदड़ो से सूती कपड़े का टुकड़ा प्राप्त हुआ था।

⇒ प्रारम्भिक हड़प्पा स्तरों से कालीबंगा में एक ही खेत में साथ-साथ दो फसलों के उगाने का साक्ष्य प्राप्त होता है।

⇒ भारत में मूर्तिपूजा का प्रारम्भ हड़प्पा काल से प्रारम्भ होता है।

⇒ कालीबंगन में दुर्ग तथा निचला नगर अलग-अलग प्राचीरों से घिरे हुए है।

diwakar@specialclasses

⇒ हड़प्पा, मोहनजोदड़ो तथा कालीबंगा में दुर्ग नगर के पश्चिम में स्थित है।

⇒ गुजरात के हड़प्पाकालीन पुरास्थलों से धान की खेती के प्रमाण मिले है।

⇒ सैन्धव व्यापारिक केन्द्रों से मेसोपोटामिया के साथ व्यापार दिलमुन नामक मध्यस्थ लोथल से होता था।

⇒ चार्ल्स मैसन ने सर्वप्रथम हड़प्पा के विशाल टीलों की ओर ध्यान आकृष्ट किया था।

| (सैन्धव सभ्यता के पतन के मत) | (विद्वान) |
| --- | --- |
| * सिन्धु नदी की बाढ़ | → मार्शल एवं मैके |
| * वाह्य आक्रमण | → गार्डन चाइल्ड एवं मार्टिम व्हीलर |
| * जलवायु परिवर्तन | → आरेल स्टीन |
| * भूतात्विक परिवर्तन | → राइक्स एवं डेल्स |

diwakar@specialclasses

⇒ मुहरों के अतिरिक्त हड़प्पा सभ्यता की लिपि के नमूने मृद्‌भाण्डों पर प्राप्त हुए है।

⇒ सिन्धु सभ्यता में अन्नागार, दो मंजिला भवन एवं स्नानागार प्राप्त हुए।

⇒ सिन्धु सभ्यता का तिथिक्रम सर्वप्रथम मेसोपोटामिया के अवशेषों के सापेक्ष कालक्रम से निर्धारित किया गया।

⇒ सिन्धु सभ्यता के मापक 16 गुणज भार के है।

⇒ "अन्नागार" मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत थी।

⇒ हड़प्पा, मोहनजोदड़ों का ह्रास 2000 BC से प्रारम्भ हुआ।

⇒ सिन्धु सभ्यता के लोग अश्व से परिचित नही थे।

⇒ हड़प्पा संस्कृति के स्थलों का सर्वाधिक संकेन्द्रण घग्गर-हाकरा नदियों के किनारे प्राप्त हुआ है।

⇒ हड़प्पीय फसलों में से गेहूं, जौ, चावल का प्रसार पश्चिम एशिया से माना जाता है।

| (हड़प्पा संस्कृति के स्थानों से प्राप्त वस्तुए) | | (सम्भव स्रोत) |
| --- | --- | --- |
| तांबा | — | राजस्थान |
| शंख | — | कच्छ |
| लाजवर्द माणी | — | अफगानिस्तान |
| स्वर्ण | — | दक्कन |

⇒ मृत्तिका-पात्र के साथ शरीर का विस्तारित शवाधान हड़प्पा संस्कृति में प्रमुख अन्त्येष्टि प्रथा थी।

⇒ पशुपति मुद्रा पर अंकित पशु व्याघ्र, हाथी, गैंडा, और भैंसा है।

⇒ सुमेलन :

युगल शवाधान ⟶ लोथल

अग्निवेदियाँ ⟶ ~~बनावली~~ कालीबंगा

कर्मकारों के निवास ⟶ ~~चन्हूदड़ो~~ हड़प्पा

मनकाकारी ⟶ ~~कालीबंगा~~ चन्हूदड़ो

diwakar@specialclasses

⇒ हड़प्पावासियों द्वारा निर्मित मृण्मूर्तियों के प्रमुख विषय खिलौने, पूजीपित पशु एवं मानव आकृतियाँ थे।

⇒ ताम्र मूर्तियों एक निधान, जिसे प्रायः हड़प्पा संस्कृति काल से सम्बद्ध किया जाता है, दैमाबाद से प्राप्त हुआ था।

⇒ देसलपुर एवं सुरकोटदा कच्छ प्रदेश में स्थित है।

⇒ (लोथल) से फारस की खाड़ी की मुद्रा प्राप्त हुयी है।

⇒ आमरी संस्कृति सिन्ध क्षेत्र में पनपी।

⇒ धान की भूसी के साक्ष्य रंगपुर (खम्भात की खाड़ी) से प्राप्त हुए।

⇒ काली लकड़ी, हाथी दांत, एवं सोना का निर्यात मेलुहा से होता था।

⇒ मोहनजोदड़ो नगर सर्वाधिक क्षेत्रफल में विस्तृत था।

⇒ हड़प्पीय सीलों का चौकोर आकार सर्वाधिक प्रचलित था।

⇒ पकी मिट्टी के बने हल का प्रतिरूप बनावली से प्राप्त हुआ है।

⇒ हड़प्पावासियों का विनाश आर्यों ने किया, इस मत के समर्थन में कोई भी पुरातात्विक साक्ष्य नहीं मिलता।

⇒ हड़प्पाकाल का एक कांसे का रथ, जिसमें दो बैल जुते हैं और इसे एक नग्न मानव चला रहा है, दैमाबाद (महाराष्ट्र) से प्राप्त हुआ था।

⇒ (लोथल) की खुदाई से एक अत्यंत उन्नत जल-प्रबंधन व्यवस्था प्राप्त हुयी थी।

⇒ हड़प्पाकालीन लिपि वर्णानुक्रमिक नहीं है, बल्कि मुख्यत: चित्रलिपि है।

⇒ तांबे की एक मानव आकृति हड़प्पा से प्राप्त हुयी है।

⇒ आई०महादेवन ने सिन्धु लिपि के उद्‌वाचन पर काम किया है।

⇒ हड़प्पा से कब्रिस्तान एच. संस्कृति के साक्ष्य मिले हैं।

⇒ हड़प्पा से प्राप्त अन्नागार रावी नदी के किनारे स्थित था।

⇒ (लोथल) से एक भाण्ड प्राप्त हुआ, जिस पर "पंचतंत्र की चालाक लोमड़ी" के सादृश्य दृश्य अंकित था।

diwakar@specialclasses

⇒ नगर, कटपलो, दादरी तथा भगवानपुरा से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्य इंगित करते हैं कि परवर्ती हड़प्पा सभ्यता के लोग एवं चित्रित धूसर भाण्ड प्रयोग करने वाले लोग सम्पर्क में तो आए परन्तु एक ही क्षेत्र में अलग-अलग बस्तियों में रहे।

⇒ हड़प्पा सभ्यता में सर्वाधिक बाढ़ का सामना मोहनजोदड़ो को करना पड़ा खुदाई में इसके सात स्तर प्राप्त हुए हैं।

⇒ सिन्धु लिपि दांए से बाये की ओर है, लेकिन कुछ में दाए से बाए और फिर बाए से दाए की ओर है, इसे बूस्ट्रोफेडन कहते हैं।

⇒ धौलावीरा भारत में खोजा गया सबसे बड़ा सैंधव स्थल है।

⇒ वर्तमान में ज्ञात सैंधव स्थलों की अनुमानित संख्या 1500 है।

⇒ राखीगढ़ी भारत में खोजा गया दूसरा सबसे बड़ा सैंधव पुरास्थल है।

⇒ (मोहनजोदड़ो) से प्राप्त "पुजारी का सिर" 'मंगोलायड प्रजाति' का है।

⇒ मोहनजोदड़ो से प्राप्त 'नर्तकी की मूर्ति' "आद्य - आस्ट्रेलायड" प्रजाति की है।

⇒ सिन्धु सभ्यता को सरस्वती सभ्यता भी कहा जाता है, क्योंकि इस सभ्यता के 80% स्थल सरस्वती नदी के आस-पास स्थित थे।

⇒ भारत में चांदी की उपलब्धता के प्राचीनतम साक्ष्य हड़प्पा संस्कृति से मिले हैं।

⇒ "ब्राहुई" बलूचिस्तान की भाषा है, किन्तु शास्त्रीय दृष्टि से यह द्रविण परिवार की भाषा है।

⇒ आधुनिक देवनागिरी लिपि का प्राचीन रूप "ब्राह्मी" है।

⇒ नौसारो पुरास्थल से 'सिन्दूर' के प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

⇒ लोथल का गोदीबाड़ा सम्पूर्ण हड़प्पा संस्कृतमाला में निर्मित पकी ईंटों का विशालतम संस्चना है।

⇒ हड़प्पा संस्कृति से प्राप्त शिव की मुहर पर निरूपित आकृति की पहचान - योगमुद्रा में बैठे शिव जिनके चारों ओर पशुओं की आकृतियां अंकित है, के रूप में की गयी है।

⇒ नेग्रीटो प्रजातीय तत्व हड़प्पा स्थलों के कंकाल अवशेषों से नहीं मिला है।

diwakar@specialclasses

* लोथल ⟹ गोदीबाड़ा
* कालीबंगा ⇒ जुता हुआ खेत
* धौलावीरा ⇒ हड़प्पन लिपि के बड़े आकार के दस चिन्हों वाला शिलालेख
* बनावली ⇒ पक्की मिट्टी की बनी हुई हल की प्रतिकृति

⇒ उत्तर वैदिक काल में महत्व प्राप्त किए प्रजापति देवता में पूर्ववर्ती देव विश्वकर्मा एवं हिरण्यगर्भ समाहित हो गये।

⇒ अपने पुरोहित के साथ विदेध माथव के पूर्व की ओर प्रवजन की कथा 'शतपथ ब्राह्मण' में वर्णित है।

⇒ ऋक् संहिता में जंगल की देवी "अरण्यानी" का प्रथम उल्लेख है।

⇒ ऋग्वेद के सूक्तों में हिमवन्त एवं मूजवन्त का उल्लेख किया गया है।

⇒ ऋग्वेद के सूक्तों में उल्लेखित अधिकांश नदियां यमुना व गंगा के पश्चिम में बहती है।

⇒ 'गो - अपहरण' के प्रसंग में ऋग्वेद में प्रमुख रूप से प्राणियों का नाम आता है।

diwakar@specialclasses

⇒ वैदिक संस्कृति में बौने को "ऋभु" कहते थे।

⇒ उत्तर वैदिक काल के प्रमुख लक्षण जंगलों का व्यापक रूप से जलाया जाना, लौह उपकरणों का निर्माण, एवं ऋतुओं का ज्ञान है।

⇒ ऋग्वेद में लोग इन्द्र का आह्वन भौतिक सुख एवं विजय के प्रयोजन से करते थे।

⇒ अश्वपति, उपनिषदों में उल्लिखित कैकैय जनपद का एक दार्शनिक राजा था।

⇒ प्राचीन भारतीय धर्मग्रन्थों में इन्द्र के साथ कृष्ण के विरोध का उल्लेख मिलता है।

⇒ नील लोहित, जो वैदिक ग्रंथों में उल्लिखित एक प्रकार का मृदभाण्ड है, कृष्ण एवं लाभ भाण्ड से अभिन्न माना जा सकता है।

⇒ वैदिक ग्रंथो में "खिल्य" शब्द ऊसर भूमि के लिए प्रयुक्त होता था।

⇒ ऋग्वेद में उल्लिखित 'यदु' एवं 'तुर्वस' दो जन थे।

⇒ ऋग्वेद में 'अन्यव्रत' शब्द 'दस्यु' के सन्दर्भ में प्रयुक्त हुआ है।

⇒ "मैं कवि हूं, मेरा पिता भिषज है और मेरी माता अन्न पीसती है।" यह अवतरण ऋग्वेद में मिलता है।

⇒ वैदिक कालीन नदियों के प्राचीन एवं आधुनिक नाम –



सरस्वती ⇒ घग्गर हाकरा
शतुद्रि ⇒ सतलज
परुष्णी ⇒ रावी
विपासा ⇒ व्यास

⇒ ऋग्वेद में सम्पत्ति का मुख्य रूप गो-धन था।

⇒ उपनिषद् काल में "ब्रह्मा" का आविर्भाव एक परम सत्ता के रूप में हुआ।

⇒ दसराज्ञ युद्ध का प्रमुख कारण पुरोहितों का षड्यंत्र था।

⇒ वैदिक काल में द्विज में ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य शामिल थे।

⇒ प्राचीन लौह युगीन बस्तियों से सम्बन्धित मृदभाण्ड चित्रित धूसर मृदभाण्ड थे।

⇒

| वैदिक देवता | उनके कार्य |
|---|---|
| पूषन | वनस्पतियों एवं औषधियों के देवता |
| सविता | प्रकाश के देवता |
| अदिति | सर्वशक्तिमान देवी |
| द्यौ | सूर्य के पिता |

⇒ वैदिक संस्कृति में "नप्तृ" शब्द चचेरे भाई बहन, नाना, मामा इत्यादि सम्बन्धियों के लिए प्रयुक्त होता था।

diwakar@specialclasses

⇒

| विवाह के प्रकार | आशय/प्रकृति |
|---|---|
| ब्रह्म विवाह | समान वर्ण में कन्या का मूल्य चुकाकर |
| दैव विवाह | यज्ञ करने वाले पुरोहित के साथ विवाह |
| प्रजापत्य विवाह | प्रेम विवाह |
| गान्धर्व विवाह | बिना लेन देन के योग्य वर से विवाह |
| असुर विवाह | कन्या के बदले वर से धन प्राप्त करना (विक्रय विवाह) |

⇒ राजा के निर्वाचन से सम्बन्धित सूक्त ऋग्वेद में पाये जाते हैं।

⇒ वृक, लांगल एवं सीर वैदिक शब्दावली में कृषि के उपकरणों के द्योतक हैं।

⇒ ऋग्वेद के आठवें मण्डल की हस्तलिखित ऋचाओं को "खिल" कहते हैं।

⇒ ऋग्वेद के दसवें मण्डल में पुरुष सूक्त में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र वर्णों का उल्लेख है।

⇒ यजुर्वेद की दो शाखायें, शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण यजुर्वेद है। शुक्ल यजुर्वेद को वाजनेयी संहिता भी कहते हैं।

⇒ अथर्ववेद की रचना चारों वेदों में सबसे अन्त में हुयी थी, इसमें 731 सूक्त, 20 अध्याय तथा 6000 मन्त्र हैं।

⇒ अथर्ववेद में परीक्षित को "कुरुओं का राजा" कहा गया है।

⇒ 6 वेदाङ्ग - शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द एवं ज्योतिषी हैं।

⇒ सुरा की आहुति 'सौत्रामणि' का लक्षण है।

⇒ राज्य के अधिकारी (रत्निन) राजसूय यज्ञ से सम्बन्धित होते थे।

⇒ पुरुषमेध यज्ञ में 25 यूपों के प्रयोग का विधान था।

diwakar@specialclasse

⇒ साहित्य में शिव का प्रथम रूप "रुद्र" मिलता है।

⇒ "यूप" याज्ञिक स्तम्भ होते थे।

⇒ चित्रित धूसर मृदभाण्ड वैदिक काल से सम्बन्धित थे।

⇒ "गीता" ग्रन्थ में वर्णव्यवस्था गुणों एवं अभिरुचियों पर आधारित थी।

⇒ वैदिक ग्रंथों में प्रयुक्त "ऋत" शब्द नैतिक व्यवस्था से सम्बन्धित था।

⇒ ऋग्वेद में हल से खींची गई रेखा के लिए "सीता" शब्द का प्रयोग किया गया है।

⇒ ऋग्वेद का सर्वप्रमुख देवता इन्द्र है।

⇒ ऋग्वैदिक काल में सर्वप्रथम "राज्याभिषेक" की परम्परा आरम्भ हुई।

diwakar@specialclasses

⇒ उत्तर वैदिक काल में केवल वैश्यों पर कर का भार होता था।

⇒ विज्ञानेश्वर वह स्मृतिकार थें, जिन्होनें पिता के जीवन-काल में ही पुत्रों के बीच सम्पत्ति के विभाजन की अनुमति दी।

⇒ जनक के दरबार में गार्गी ने याज्ञवल्क्य को चुनौती दी थी।

⇒ वैदिक काल में "रत्निन" राजकीय सेवारत कुलीन व्यक्ति होते थे, जो रत्न धारण करना पसन्द करते थे।

⇒ यर्जुवेद गद्य एवं पद्य दोनों में रचित है।

⇒ ऋग्वेद में कुल 10 मंडल, 1028 सूक्ति, एवं 10462 ऋचायें है, तथा इसे पढ़ने वाले को "होता" कहते है।

⇒ वैदिक काल में इन्द्र के बाद दूसरे प्रमुख देवता अग्नि थे।

⇒ ऋग्वेद के "केशिन सूक्त" में समाज के चतुर्विध वर्गीकरण का विचार प्राप्त होता है।

⇒ सोम पेय का सम्बन्ध "अग्निष्टोम" नामक वैदिक यज्ञ से था।

⇒ वैदिक देवता वरुण नैतिक व्यवस्था के संरक्षक थे, जो पापियों को दंड देते थे।

⇒ वैदिक सभा एवं समिति को वैदिक देवता प्रजापति की दो पुत्रियां अथर्व वेद में कहा गया है।

⇒ सामवेद के दो उपनिषद् छान्दोग्य एवं जैमनीय है तथा इसका एक ब्राह्मण पंचविंश (ताण्ड्य ब्राह्मण) है।

⇒ यर्जुवेद का पाठन करने वाला एवं यज्ञ कराने वाले पुरोहित को "अध्वर्यु" कहते है।

⇒ नचिकेता और यम के बीच सुप्रसिद्ध संवाद कठोपनिषद् में है।

⇒ प्राचीन भारत के विश्वोत्पत्ति विषयक धारणाओं के अनुसार चारों युग का क्रम – कृत, त्रेता, द्वापर और कलि है। (30)

⇒ ब्रह्मवादिनी लोपमुद्रा ने कुछ वैदिक मंत्रों की रचना की।

⇒ आरम्भिक वैदिक साहित्य में सर्वाधिक वर्णित नदी, सिंधु नदी है।

⇒ "आर्य" भारत के ही मूल निवासी थे इसका सबसे बड़ा प्रमाण है कि 5000 BC से 800 BC के बीच किसी नये जनसमुदाय का साक्ष्य नहीं मिलता है।

⇒ वैदिक काल में "निष्क" शब्द का प्रयोग एक आभूषण के लिए होता था, किन्तु परवर्ती काल में उसका प्रयोग सिक्के के लिए हुआ।

⇒ मूर्तिपूजा का प्रारम्भ पूर्व आर्य काल से माना जाता है।

⇒ "आयुर्वेद" अर्थात "जीवन का विज्ञान" का उल्लेख अथर्ववेद में मिला है।

⇒ वैदिक समाज में "नियोग" शब्द का अर्थ, "निःसन्तान विधवा द्वारा पुत्र प्राप्ति हेतु अपने देवर के साथ संबंध" बनाने के संदर्भ में किया जाता था।

diwakar@specialclasse

⇒ "अग्निष्टोम" को सोम यज्ञ माना जाता था।

⇒ वैदिक देवता पूषन का रथ बकरे द्वारा खींचे जाने का उल्लेख मिलता है।

⇒ "मैत्रेयनाथ" ने विज्ञानवाद (योगाचार) सम्प्रदाय की स्थापना की थी।

⇒ वैदिक साहित्य में ~~~~ वाराह को प्रजापति के रूप में वर्णित किया जाता था।

⇒ ~~ऋग~~ वैदिक समाज में 'गोप' शब्द का प्रयोग राजा के लिए किया जाता था।

⇒ भगवान विष्णु का तमिल नाम "तिरुमल" है।

⇒ मनु की विधि व्यवस्था में चोरी के अपराध के लिए ब्राह्मण को सर्वाधिक दंड दिया जाता था।

⇒ वैदिक युगीन संस्कृति में सामान्य परिस्थितियों में स्त्रीधन का उत्तराधिकार में प्रथम अधिकार पुत्री को प्राप्त था।

⇒ अविवाहित लड़की के पुत्र के लिए स्मृति साहित्य में "कानीन" शब्द प्रयुक्त हुआ है।

⇒ मित्तानी संस्कृति की धार्मिक आस्था में इन्द्र, वरूण, मित्र, नासत्य देवगण विद्यमान थे।

⇒ अनुलोम विवाह का अर्थ है, उच्च वर्ण पुरुष का निम्न वर्ण नारी के साथ विवाह।

⇒ प्रतिलोम विवाह का अर्थ है, उच्च वर्ण की नारी, निम्न वर्ण का पुरुष हो।

diwakar@specialclasses

⇒ **वैदिक कालीन राज सेवक** — **कार्य**

संग्रहीतृ ⟶ कोषाध्यक्ष
भागदुघ ⟶ कर-संग्रहकर्ता
क्षता/क्षत्ती ⟶ पांसे के खेल में राजा का सहायक
अक्षवाप ⟶ प्रतिहारी/राज प्रसाद (महल) का रक्षक

⇒ धर्मशास्त्रों में भूराजस्व की दर 1/6 थी।

⇒ ब्राह्मण काल का समय 800 ई०पू० से 600 ई०पू० माना जाता है।

⇒ **उपवेद** — **संबंधित वेद**

आयुर्वेद ⟶ ऋग्वेद
धनुर्वेद ⟶ यजुर्वेद
गन्धर्ववेद ⟶ सामवेद
शिल्पवेद/अर्थशास्त्र ⟶ अथर्ववेद

⇒ ऋग्वेद के दूसरे से सातवें मण्डल तक को "वंश मंडल/गोत्र मंडल" कहा जाता है।

# वैदिक संस्कृति



⇒ ऋग्वेद की रचना सप्तसैन्धव प्रदेश में हुयी थी।

⇒ ऋग्वैदिक आर्य प्रकृति की पूजा करते थे।

⇒ वर्ण व्यवस्था का सर्व प्रथम विवरण ऋग्वेद के दसवें मण्डल में उल्लिखित है।

⇒ उपनिषदों का मुख्य प्रतिपाद्य "दार्शनिक विवेचन" रहा है।

⇒ बाल गंगाधर तिलक आर्यों का मूल स्थान "आर्कटिक क्षेत्र" को मानते थे।

⇒ वेद का शाब्दिक अर्थ "ज्ञान" है।

⇒ आर्य-अनार्य युद्ध का वर्णन वेदों में मिलता है।

⇒ ऋग्वेद में सूक्तियों की संख्या 1028 है।

⇒ पूर्व वैदिक काल में राजा पर 'सभा' और 'समिति' का नियंत्रण होता था।

⇒ उत्तर वैदिक काल में समाज का विभाजन वर्ण व्यवस्था के आधार पर था।

⇒ उत्तर वैदिक काल में धार्मिक क्रियाओं में कर्मकाण्ड मुख्य था।

⇒ आर्यों का मुख्य निवास 'एशिया माइनर' को माना जाता है।

⇒ नगरीय जीवन वैदिक सभ्यता की विशेषता नहीं थी।

⇒ मैक्समूलर नामक विद्वान वेदों के अध्ययन के लिए प्रसिद्ध है।

⇒ "महाभाष्य" की रचना पतंजलि ने की थी।

⇒ ऋग्वेद सभ्यता में शहरी जीवन का पतन हुआ।

⇒ उत्तर वैदिक युग में पैतृक परिवार होते थे।

⇒ वैदिक युग में "मना" का अर्थ धन होता था।

⇒ सिन्धु घाटी तथा वैदिक दोनों सभ्यताओं में मूर्तिपूजा का प्रचलन नहीं था।

⇒ "भाग" एवं "बलि" राजस्व के साधन थे।

⇒ पाणिनी एक व्याकरण विद्वान थे, इन्होंने अष्टाध्यायी की रचना की थी।

⇒ वैदिक समाज में प्रकृति पूजा, वर्ण व्यवस्था, पैतृक परिवारों का अस्तित्व था।

⇒ ऋग्वेद में वर्णित धर्म का आधार प्रकृति पूजा था।

diwakar@specialclasses

⇒ प्राचीन साहित्यों में 8 प्रकार के विवाहों का वर्णन है।

⇒ एशिया माइनर में बोगजकोई नामक स्थान से 1400 BC का एक अभिलेख पाया गया था, जिसमें वैदिक देवताओं का वर्णन है।

⇒ विश्ववारा, घोषा, अपाला आदि विदुषी महिलाएं वैदिक मंत्रों की रचयिता मानी जाती है।

diwakar@specialclasses

⇒ प्रसिद्ध गायत्री मंत्र ऋग्वेद में है।

⇒ वैदिक काल में शासन का सामान्य स्वरूप राजतंत्र था।

⇒ वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति का संकेत सर्वप्रथम ऋग्वेद में मिलता है।

⇒ 16 संस्कारों का वर्णन गृह्य सूत्र के मूल पाठ में मिलता है।

⇒ पर्शियन भाषा "इण्डो-आर्यन" भाषा से सम्बन्ध रखती है।

⇒ "सत्यमेव जयते" उक्ति सर्वप्रथम मुण्डकोपनिषद में व्यक्त की गई।

⇒ अद्वैत दर्शन का प्रतिपादन उपनिषदों में मिलता है।

⇒ वैदिक काल में राजा को स्वेच्छा से दिया जाने वाला उपहार बलि था।

⇒ वैदिक भारत में राजाओं में बहुविवाह प्रचलित था।

⇒ यजुर्वेद कर्मकाण्डों से विशेष रूप से सम्बन्धित है।

⇒ ऋग्वेद संहिता के मंत्रों का एक चौथाई "इन्द्र देव" को समर्पित है।

⇒ ऋग्वेद में वर्णित सबसे सामान्य अपराध पशुओं की चोरी था।

⇒ आत्मा के आवागमन की परिकल्पना सर्वप्रथम ऋग्वेद में मिलती है।

⇒ बोगाजकोई अभिलेख में इन्द्र, वरुण, नासत्य और मित्र देवताओं का विशेष उल्लेख है।

⇒ अथर्ववेद को ब्रह्मवेद कहा गया है।

⇒ दशराज युद्ध परुष्णी नदी के तट पर लड़ा गया।

⇒ भारतीय जाति व्यवस्था अपने श्रेष्ठ (क्लासिकल) स्वरूप में कार्यों के विभाजन पर आधारित है।

⇒ वेदांगो की कुल संख्या छः है।

⇒ सामवेद गायन योग्य मंत्रो का ग्रन्थ है।

⇒ सुदास के विरुद्ध दस राजाओं का युद्ध विश्वामित्र के नेतृत्व में लड़ा गया।

diwakar@specialclasses

⇒ ऋग्वेद का सम्पूर्ण 9वां मण्डल "सोम देवता" को समर्पित है।

⇒ पूर्व वैदिक काल से उत्तरवैदिक वैदिक काल में राजस्व गठन का प्रमुख परिवर्तन यह हुआ कि राज्य के संगठन का आधार कुल न रहकर अपितु भूमि विस्तार हो गया।

⇒ राजा सुदास त्रित्सु वंश से सम्बन्धित था।

⇒ सर्वप्रथम परीक्षित का उल्लेख अथर्ववेद में हुआ।

⇒ पुरोहितों में ब्रह्मा का कार्य यज्ञ के सम्पादन का निरीक्षण करना था।

⇒ प्रारम्भिक वैदिक कालीन आर्यों का मुख्य व्यवसाय पशुपालन था।

⇒ सबसे प्राचीन जानी जाने वाले स्मृति, मनुस्मृति है।

⇒ ऋग्वेद सभ्यता के यज्ञवाद की आलोचना उपनिषदों के ऋषियो ने की।

⇒ श्रुति, वैदिक युगीन इतिहास का प्रधान स्रोत है।

⇒ वैदिक युग में राजा के बाद सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी सेनानी था।

⇒ संत विज्ञानेश्वर ने "मिताक्षरा" की रचना की।

⇒ प्रारम्भिक स्मृतियो के अनुसार ब्राह्मण को शूद्र द्वारा दी गयी भिक्षा नही लेनी चाहिए।

⇒ "निष्क" सबसे प्राचीन स्वर्ण सिक्का था।

⇒ पूर्व वैदिक काल में सभा, समिति एवं विदथ में प्रजातांत्रिक मामलों पर विचार विमर्श नही किया जाता था।

⇒ राजसूय यज्ञ राजा के राज्याभिषेक से सम्बन्धित है।

⇒ वेदत्रयी में सामवेद, यजुर्वेद एवं ऋग्वेद सम्मिलित है।

# महाजनपद काल (600 ई०पू० – 325 ई०पू०)

| महाजनपद | राजधानी | महाजनपद | राजधानी |
|---|---|---|---|
| गंधार | तक्षशिला | कुरु | इंद्रप्रस्थ |
| शूरसेन | मथुरा | पांचाल | अहिच्छत्र |
| वत्स | कौशाम्बी | कोशल | साकेत |
| कोशल | श्रावस्ती | अश्मक | पोटली/पोतन |
| मल्ल | कुशावती | कम्बोज | हाटक |

⇒ हर्यक वंश के शासक अजातशत्रु को 'कुणिक' कहा जाता है।

⇒ उदयिन ने गंगा एवं सोन नदियों के संगम पर पाटलिपुत्र नामक नगर की स्थापना की थी।

⇒ शिशुनाग वंश के शासक "कालाशोक" के शासन में वैशाली में द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया।

⇒ कालाशोक को "काकवर्ण" नाम से भी जाना जाता है।

⇒ सिकन्दर महान की मृत्यू 323 ई०पू० बेबीलोन में हुयी थी।

⇒ उत्तरी काले पालिशकृत मृदभाण्ड (पाटरी) भारत में द्वितीय नगरीकरण/शहरीकरण के प्रारंभ का प्रतीक माना गया।

⇒ पालि ग्रन्थों में गांव के मुखिया को "भोजक/ग्राम भोजक" कहा गया है।

⇒ उज्जैन का प्राचीन नाम अवन्तिका था।

⇒ नंदवंश का संस्थापक महापद्मनंद था।

⇒ घनानंद को ग्रीक/यूनानी लेखकों द्वारा "अग्रमीज/जैन्ड्रमीज" कहा गया।

⇒ प्राचीन भारत में पहला विदेशी आक्रमण ईरानियों द्वारा किया गया था दूसरा आक्रमण यूनानियों द्वारा किया गया।

⇒ ईरान के हखमनी वंश के शासक "डेरियस/दारयबाहु-I", ने भारतीय भू-भाग को जीतने के बाद उसे फारस साम्राज्य का 20 वां प्रांत (क्षत्रपी) बनाया।

⇒ सिकन्दर ने 326 ई॰पू॰ में भारत पर आक्रमण किया था।

⇒ हाईडेस्पस या विस्ताता (आधुनिक नाम झेलम नदी) का युद्ध (326 BC) सिकंदर एवं पोरस के मध्य हुआ था।

⇒ मगध का राजा घनानंद सिकन्दर महान का समकालीन था।

| शासक | वंश |
|---|---|
| बिम्बसार | हर्यक वंश |
| कालाशोक | शिशुनाग वंश |
| महापद्मनंद | नंद वंश |
| बिन्दुसार | मौर्य वंश |

⇒ मगध राज्य की प्रथम राजधानी गिरिव्रज/राजगृह थी। द्वितीय राजधानी पाटलिपुत्र थी, जिसका चयन उदयिन था।

⇒ सोलह महाजनपदों की सूची बौद्ध ग्रंथ "अंगुत्तर निकाय" में उपलब्ध है।

| * महाजनपद | आधुनिक क्षेत्र |
|---|---|
| मगध | पटना व गया के जिले |
| वत्स | इलाहाबाद |
| कौशल | अवध |
| अवंति | मालवा |

⇒ अभिलेखीय साक्ष्य से प्रकट होता है कि राजा नंद के आदेश से एक नहर कलिंग में खोदी गयी थी।

⇒ 'डेरियस' पहला यूनानी शासक था, जिसने भारत के कुछ भाग को अपने अधीन किया था।

⇒ मगध के राजा अजातशत्रु का सदैव वज्जि संघ (वैशाली) के साथ युद्ध रहा।

⇒ वाज्जि संघ के विरुद्ध युद्ध में अजातशत्रु ने पहली बार "रथमूसल" तथा "महाशिलाकण्टक" नामक गुप्त हथियारों का प्रयोग किया।

⇒ नंद वंश का अन्तिम सम्राट घननंद था।

* **राजा** — **राज्य**

प्रद्योत ⟷ अवन्ति

उदयिन ⟷ वत्स

प्रसेनाजित ⟷ कोशल

अजातशत्रु ⟷ मगध

⇒ भारत में सिक्कों / मुद्रा का प्रचलन 600 ई०पू० में हुआ।

⇒ अजातशत्रु एवं प्रसेनाजित "बुद्ध" के समकालीन राजा था।

⇒ शिशुनाग ने अवंति को जीतकर मगध का हिस्सा बना दिया था।

⇒ "बिम्बसार" ने अंग राज्य का विलय अपने राज्य मगध में कर लिया था।

⇒ अजातशत्रु ने काशी और लिच्छवी का विलय मगध साम्राज्य में किया था।

⇒ पुराणों एवं महाकाव्यों के अनुसार मगध साम्राज्य की स्थापना बृहद्रथ ने की थी।

⇒ मगध राज्य में गणतंत्रात्मक शासन व्यवस्था नहीं थी।

⇒ महापद्मनंद ने मगध साम्राज्य को सर्वाधिक विस्तार दिया और "सर्वक्षत्रांतक" एवं "एकराट" की उपाधि धारण की।

⇒ मगध 6वीं शताब्दी में, प्रारंभ में भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली नगर था।

⇒ भारत पर ईरानी आक्रमण के प्रभाव

1) खरोष्ठी लिपि का प्रचार ✓
2) अभिलेख उत्कीर्ण करने की कला का प्रचार ✓
3) ईरानियों की क्षत्रप प्रणाली का प्रचार ✓
4) प्याज आकार के गुबंज की कला का प्रचार ✓
5) स्त्री अंग-रक्षकों की नियुक्ति ✓

⇒ बिम्बिसार को "सेनिया" (नियमित और स्थायी सेना रखने वाला) कहा जाता था।

⇒ महापद्मनंद को "उग्रसेन" (भयानक सेना का स्वामी) कहा जाता था।

⇒ महाजनपद काल में श्रेणियों के संचालक को श्रेष्ठिन कहा जाता था। "गृहपति" धनी किसान को कहते थे।

## सुमेलन :

अष्टकुलक ⟷ परामर्शदायी संस्था

महामात ⟷ उच्च कोटि के अधिकारी

✓ बलिसाधक ⟷ किसानों से कर वसूलने वाला अधिकारी

शौल्किक/शुल्काध्यक्ष ⟷ शिल्पियों व व्यापारियों से शुल्क या चुंगी वसूलने वाला अधिकारी

⇒ विश्व का पहला गणतंत्र वैशाली में लिच्छवी द्वारा स्थापित किया गया था।

⇒ महात्मा बुद्ध की सेवा में बिम्बसार ने राजवैद्य "जीवक" को भेजा था। अवन्ति के राजा प्रद्योत के उपचार के लिए भी बिम्बिसार ने जीवक भेजा था।

⇒ बिम्बिसार की हत्या उसके पुत्र अजातशत्रु ने गद्दी प्राप्त करने के लिए की और अजातशत्रु की हत्या उसके पुत्र उदयिन ने 461 ई० पू० में कर दी और वह मगध का शासक बना।